इकाई 15 पर्यटन स्थल और स्थलीय योजना

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 पर्यटन योजना का महत्व

15.3 पर्यटन योजना

15.4 पर्यटक स्थल एवं संरक्षण

15.5 सारांश

15.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पर्यटन में योजना के महत्व का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे,
- एक ऐसे पर्यटन स्थल के विकास के संबंध में सूचना प्राप्त का सकेंगे जिसमें पर्यटकों के साथ-साथ पर्यावरण का भी ख्याल रखा गया हो,
- यह जान पाएंगे कि पर्यटक गतिविधियों द्वारा किस प्रकार संरक्षण का लक्ष्य प्राप्त किया जाता है,
- पर्यटन और पर्यावरण सुरक्षा के लिए एक साथ कायम रहने की संभावना पर विचार कर सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

कोई स्थान तभी पर्यटन स्थल बन सकता है जब उसमें कुछ आकर्षण हो जिसकी प्रत्याशित पर्यटकों के मस्तिक में एक छवि हो और इस आकर्षण के साथ ही वहाँ आवश्यक सुविधाएं भी हों। पर्यटक आकर्षण विभिन्न आकार प्रकार के हो सकते हैं। वह "प्राकृतिक" पर्यटक स्थल जैसे द्वीप, समुद्रतट, झीलें आदि हो सकते हैं, ऐतिहासिक--जिसमें अतीत का कोई स्मृति चिह्न हो सकता है या मानव द्वारा निर्मित जिन्हें विशेष रूप से पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विकसित किया गया है, जैसे उपवन आदि। एक पर्यटक स्थल में बहुविध और अतिव्यापि आकर्षण केन्द्र भी हो सकते हैं।

फिर भी आधुनिक पर्यटन पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि वह सभी उपर्युक्त वर्गीकृत केंद्रों को क्षति पहुँचा रहा है। स्थानीय प्राकृतिक दृश्यों, देशज सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं को क्षति पहुँचाने का आरोप भी इस पर लगाया जाता है जिससे प्रदूषण और पर्यावरणीय क्षति पहुँचती है। ऐसा सहज रूप से नहीं होना चाहिए यह बात इस खंड की इकाई 14 में बताई गई है। इस समस्या का निदान पर्यटकों के आवागमन को रोकने में नहीं बल्कि पर्यटन को संरक्षण का साधन बनाने में है। इसी संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि पर्यटन का विकास पर्यटन स्थल और स्थलीय योजना पर आधारित होना चाहिए। इसके अलावा पर्यटन अब हाशिए का मुद्दा नहीं रहा बल्कि यह विश्व के आर्थिक, सामाजिक और भौतिक विकास का एक प्रमुख और अभिन्न हिस्सा बन गया है। भौतिक और सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण पर इसका प्रभाव महत्वपूर्ण और व्यापक है और आशा की जाती है कि जहाँ पर्यावरणीय क्षति हो चुकी है वहाँ यह प्रभाव और भी महत्वपूर्ण और कारगर होगा। अक्सर निजी

पर्यटन कार्यक्रमों की घटिया योजना और उद्योग की समग्र वृद्धि के कारण ऐसा होता है। पर्यटन के कारण विनाश का सबसे ज्वलंत और उपयुक्त उदाहरण डलझील है जो पाँच दशक पूर्व पच्चीस वर्ग किलोमीटर में फैली हुई थी और अब केवल दस वर्ग किलोमीटर में ही सिमट कर रह गई है।

15.2 पर्यटन योजना का महत्व

संरक्षण का आदर्श अनिवार्यत: पर्यटन का विरोधी नहीं है। संरक्षण को सामाजिक मान्यता प्राप्त है और पर्यटन के माध्यम से प्राकृतिक स्थलों की लोकप्रियता से इसे समर्थन प्राप्त हो रहा है। अत: पर्यटन के विकास में समुचित योजना पर अधिक से अधिक बल दिया जा रहा है। देशों और क्षेत्रों ने अपनी मान्यताओं और पर्यावरण की सुरक्षा का प्रयास प्रारंभ कर दिया है, हालाँकि इसके साथ ही वह और अधिक धन और पर्यटकों को आकर्षण करने की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार पर्यटन क्षेत्र के विकास में योजना का महत्व पर्यटक, पर्यावरण और स्थानीय पर्यावरण के मध्य संतुलन उत्पन्न करने के प्रयास के कारण पैदा हुआ। भारत जैसे विकासशील देशों में स्थिति संकटपूर्ण है जहाँ मौजूदा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवश्यक ढाँचागत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी यह याद रखना चाहिए कि पर्यटन और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक और संपूरक हैं। स्वयं पर्यटन में सम्पन्नता के बीज भी हैं और विनाश के भी। निश्चित रूप से सांस्कृतिक और पर्यावरणीय सुरक्षा रूप में संरक्षण से लोगों का हित जुड़ा हुआ है अत: इसी कारण से वे पर्यटन का भी समर्थन करते हैं।

राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पर्यटन योजना प्रारंभ करने के अनेक महत्वपूर्ण और विशिष्ट लाभ हैं। इन लाभों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है :

- समग्र पर्यटन विकास के उद्देश्यों और नीतियों को स्थापित करना पर्यटन का लक्ष्य रहा है और ये लक्ष्य किस प्रकार प्राप्त किए जा सकते हैं
- पर्यटन इसलिए विकसित किया जा रहा है ताकि इसके प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों को हमेशा के लिए बनाए रखा जाए और भविष्य तथा वर्तमान में उपयोग के लिए संरक्षित किया जाए
- पर्यटन के समग्र विकास नीतियों और देश या क्षेत्र के स्वरूप के साथ जोड़ना और पर्यटन तथा अन्य आर्थिक क्षेत्रों के मध्य निकट का संपर्क स्थापित करना
- पर्यटन विकास के सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्रों के निर्माण के लिए विवेकपूर्ण आधार प्रदान करना
- पर्यटन क्षेत्र के सारे विभिन्न तत्वों के समन्वित विकास को संभव बनाना। इसमें पर्यटन आकर्षणों, गतिविधियों सुविधाओं और सेवाओं एवं विभिन्न तथा विखंडित पर्यटक बाजार के बीच परस्पर संबंध स्थापित करना
- पर्यटन के आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक लाभों को उत्कर्ष पर पहुँचाना और उन्हें संतुलित करना तथा समाज के लिए इन लाभों का न्यायसंगत वितरण करना और पर्यटन की समस्याओं को कम करना
- एक ऐसा भौतिक ढाँचा प्रदान करना जो पर्यटन के आकर्षणों, सुविधाओं और सेवाओं तथा अधिसरंचनात्मक सुविधाओं के साथ-साथ पर्यटन स्थल, प्रकार और विस्तार को दिशा दिखा सके
- विशिष्ट पर्यटन विकास क्षेत्र के लिए, जो एक दूसरे के साथ सामंजस्य रखते हैं, एक दूसरे को सुदृढ़ करते हैं, दिशा निर्देशन एवं मानक निर्धारित करना ताकि सविस्तार योजना तैयार की जा सके।
- आवश्यक संगठनात्मक और अन्य संस्थानिक ढाँचा उपलब्ध कराकर पर्यटन विकास नीति एवं योजना और पर्यटन क्षेत्र के प्रबंधन के लिए ठोस आधार प्रस्तुत करना।
- पर्यटन विकास की प्रगति पर निरंतर निगाह रखने और इसे सही दिशा में विकसित करने के लिए आधार प्रदान करना।

(राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पर्यटन योजना)

15.3 पर्यटन योजना

सारी दुनिया में पर्यटन से लाभ कमाने की होड़ लगी हुई है। इस होड़ में पर्यटन का अनियंत्रित और अनियोजित विकास हो रहा है। इसे एक ओर चुने हुए पर्यटन स्थलों और क्षेत्रों का वैभव बढ़ा है तो दूसरी ओर झुग्गी झोंपड़ी और गंदी बस्तियों में भी अपार वृद्धि हुई है। प्रकृति एवं पर्यावरण की सुरक्षा को प्राथमिकता देने की अपेक्षा व्यापार की दृष्टि से संसाधनों का निर्दयता के साथ उपयोग अपर्याप्त ढाँचागत सुविधा और अनुचित अधिसंरचना का कारण बना है। यह विडंबना ही है कि पर्यटन से अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए क्षेत्र विशेष की 'वहन क्षमता' से ज्यादा पर्यटकों को स्वीकार कर विश्व के कई सुंदर पर्यटन स्थलों को भीड़ भाड़ वाला इलाका बना दिया है। पर्यटन के नाम पर इस विकास ने इन्हीं आकर्षणों का सर्वनाश करना प्रारंभ कर दिया है जो पर्यटक को वहाँ आने के लिए प्रेरित करते थे।

ढीले ढाले और अव्यवस्थित विकास के कारण विनाश ने समाजों को पर्यटन स्थलों की वहन क्षमताओं तथा पर्यटन बाजार की आवश्यकताओं के वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित पर्यटन विकास की योजना के प्रति जागरूक कर दिया है। योजना की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से लम्बे समय के पर्यटन के संभावनाओं वाले कुछ क्षेत्रों या स्थानों की पहचान करती है। जन पर्यटन बड़े पैमाने पर पर्यावरणीय संसाधनों की माँग करता है और जन पर्यटन के साथ पारिस्थितिक व्यवस्था की जिसे सुरक्षा और संरक्षण की समस्या पैदा होती है। पर्यटक अनजाने में क्षति पहुँचाते हैं। नए होटलों, भवनों, सड़कों आदि के निर्माण की योजना बनाते समय कोमलता, सौन्दर्य और अद्वितीय प्राकृतिक परिवेश पर विशेष धन दिया जाना चाहिए। इस क्षेत्र में प्रत्येक नए निर्माण को पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए। कूड़े कचरे और मलबे के निपटारे का भी प्रबंध होना चाहिए। छोटे से छोटे पर्यटन स्थल की पारिस्थितिकी पर्यावरण का अभिन्न अंग होती है। प्राकृतिक स्थलों में साधारण सा समायोजन कर, जैसे फूलों के पौधे लगाकर और वृक्ष लगाकर पारिस्थितिक सम्पूर्णता को पुन: स्थापित किया जा सकता है। इसलिए नए पर्यटन स्थलों को विकसित करने में आयोजकों, पारिस्थितिकीविज्ञों और तकनीक विशेषज्ञों के मध्य नजदीकी समन्वय होना चाहिए।

पर्यटन स्थल के निर्धारण से पहले स्थल विशेष का ध्यानपूर्वक अवलोकन और अध्ययन करना चाहिए। प्रारंभ में पर्यटकों के साथ आनेवाले प्रदूषण की पहचान करनी चाहिए और उनके प्रभावी निपटारे के लिए प्रभावी प्रबंधन करना चाहिए। दूसरे यह की पर्यटन उद्योग से सम्बद्ध उद्योगों को, जो पर्यावरण में घुटन पैदा करते हैं पहचान कर दूरदराज के इलाकों में स्थापित कर देना चाहिए। ऐसे स्थलों पर, जहाँ मोटर गाड़ियाँ, बाधा उत्पन्न कर सकती हों, वहाँ मोटर वाहनों के आने जाने पर प्रतिबंध कर लगाना चाहिए। एक दूसरे स्तर पर होटल अनुज्ञापत्र प्रदान करते समय कुछ हरियाली का क्षेत्र का प्रावधान अनिर्वायत: सम्मिलित होना चाहिए। इसके अतिरिक्त स्वयं स्थल पर व्यापक सहभागिता होनी चाहिए। एक बार जब सबको स्वस्थ्य पारिस्थितिकी के लाभों की जानकारी हो जाएगी तब पर्यटकों के व्यवहार में भी परिर्वतन आएगा। इस तथ्य को उजागर करने की आवश्यकता है कि पर्यटन को पारिस्थितिकीय संरक्षण का मित्र समझना चाहिए न कि उसका शत्रु। अन्तत: पर्यावरण में सुचारू नियंत्रण, प्रबंधन और योजना कार्य प्रणाली का समावेश होना चाहिए। जैसे ही एक बार कोई स्थान पर्यटक स्थल हो जाएगा तो उसके आकर्षणों की लोकप्रियता प्रबंधन नियंत्रण की माँग करेगी जिसकी आवश्यकता शायद पर्यटन के बिना न होती।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटन योजना का क्या महत्व है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विशेष पर्यटन स्थल पर पर्यटन योजना को किस पर आधारित होना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

.....

15.4 पर्यटक स्थल एवं संरक्षण

घोर जन सांख्यिकीय एवं आर्थिक आवश्यकताओं के बावजूद अब भी विश्व के कुछ घने वन क्षेत्र भारत में मौजूद हैं और इनमें से कुछ ज्यादा अच्छी तरह संरक्षित क्षेत्र उत्तर प्रदेश में स्थित हैं। ऐसा दो कारणों से है। पहला यह कि उत्तर प्रदेश ने भारत में आधुनिक संरक्षण आन्दोलन में पहल की। उत्तर प्रदेश हिमालय के उप पर्वतीय क्षेत्र को 1879 में ही आरक्षित वन क्षेत्र घोषित कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त 1935 में भारत के प्रथम राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना ने वन्य प्राणियों को हिमालय के इस भाग में विनाश और विलोपन से बचा लिया।

राष्ट्रीय उद्यान की अवधारणा संरक्षण और पर्यटन दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण है। इससे दोनों को लाभ पहुँचता है। वास्तव में राष्ट्रीय उद्यान बड़े पैमाने के पर्यटन और संरक्षण व्यवस्था का भाग है और अन्योन्याश्रित है। बाघों, चीतलों, तेंदुओं और नागों के निवास स्थान के रूप में भारत की छवि निस्संदेह विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने का सबसे बड़ा साधन है।

भारत में ऐसे अनेक साहसी पर्यटन विकल्प मौजूद हैं जो पर्वतों, नदियों, वनों या समुद्री तटों के अनुभवों के लिए पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। किन्तु अपने प्राकृतिक कारणों से ऐसे स्थल पर्यावरणीय दृष्टि से नाजुक हैं और जरूरत से ज्यादा पर्यटकों के आगमन से इनका अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। इसके अलावा किसी क्षेत्र को केवल जनसंख्या से दूर रखकर ही प्राकृतिक क्षेत्रों का संरक्षण नहीं किया जा सकता है। यहीं संरक्षण विशेषज्ञ पर्यटन को संरक्षण का साधन बनाने का प्रयास करते हैं।

संरक्षण विशेषज्ञ मानते हैं कि सौंदर्य और अक्षत भव्यता में प्राकृति के उदारता के प्रभाव और सान्निध्य से ही हर आयु और पृष्ठभूमि के पर्यटक और भ्रमणकर्ता प्रकृति के निकट आ सकते हैं और इन्हें पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और पर्यावरण का दोस्त बने रहने के लिए शिक्षित और प्रेरित किया जा सकता है। पर्यटन पर्यावरण के रखवाले के रूप में कार्य कर सकता है। उदाहरणार्थ फूलों की घाटी पर्यटकों की धूमधाम के कारण ही फूलों की घाटी के रूप में प्रसिद्ध है। यदि वहाँ पर्यटन पर प्रतिबंध लगा दिया जाए तो वह बरबाद हो जाएगा और चारागाह मात्र बन कर रह जाएगी।

पर्यटन के विकास के लिए संस्थागत योजना मुख्यत: स्थल नियोजन पर विशेष बल देती है। पर्यटन प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों की पहचान और सुरक्षा पर आधारित होता है और यह सुविधाओं की उपलब्धता पर भी निर्भर होता है। इसका एक असाधारण उदाहरण साऊथ कैरोलीना प्योरटोश्री को और लोरिडा में रिजॉर्ट कॉम्पलेक्स व्यापार संस्थान है। यह पर्यटन का अभिन्न अंग होने के साथ-साथ संरक्षण का ख्याल भी रखता है। इसका एक विशेष प्रभाग 'पर्यावरणीय व्यवस्था के विकास' की ही देखरेख करता है।

यदि पर्यटन अच्छी तरह से आयोजित, विकसित एवं प्रतिबंधित हो तो वह महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। मसलन,

- महत्वपूर्ण प्राकृतिक क्षेत्रों, समुद्री पर्यावरण सहित वन्य प्राणियों और राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय उद्यानों और अभयारण्यों के संरक्षण और विकास के लिए धन उपलब्ध कराने में सहयोग देता है क्योंकि यही पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण है। ऐसे देशों में जहाँ संसाधन सीमित है यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।
- पर्यटकों के लिए आकर्षणों के रूप में पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक स्थानों के संरक्षण को न्यायसंगत ठहराने और उसके लिए धन उपलब्ध कराने में सहयोग देता है। अन्यथा इसमें से बहुत से स्थान क्षतिग्रस्त हो जाते या लुप्त हो जाते। यहाँ तक कि कस्बे या नगर के सारे ऐतिहासिक इलाकों को पर्यटन के लिए संरक्षित और विकसित किया जा रहा है।
- क्षेत्र के पर्यावरणीय गुण को सुधारने में सहयोग देता है क्योंकि पर्यटक ऐसे स्थानों पर जाना चाहते हैं जो आकर्षक, स्वच्छ और प्रदूषण रहित हो। पर्यटन वायु, जल, ध्वनि और दृष्टि प्रदूषण को नियंत्रित करने, संकुलन कम करने और आकर्षक प्राकृतिक क्षेत्रों और सुंदर भवनों का निर्माण करने की प्रेरणा देता है। अच्छी जगह एवं अच्छी तरह परिकल्पित पर्यटक सुविधाएं स्वयं ही शहरी एवं ग्रामीण दोनों जगहों के पर्यावरण को आकर्षक बना सकते हैं। अधिसंरचनात्मक सुविधाओं, विशेष रूप से जल आपूर्ति, मल जल निकास और ठोस अपशिष्ट निपटारे में सुधार, पर्यावरणीय गुणों को उनन्त करने में मदद करता है।
- जब स्थानीय निवासी, विशेषकर नवयुवक, संरक्षण में पर्यटकों की अभिरुचि देखते हैं तो स्थानीय पर्यावरणीय जानकारी में वृद्धि होती है। तब वह अपने क्षेत्र में संरक्षण के महत्व को पूर्णरूप से समझाना प्रारंभ करते हैं।

(राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पर्यटन योजना)

बोध प्रश्न 2

1) वन्य प्राणी उद्यान किस प्रकार प्रभावी संरक्षण और पर्यटन में योगदान देते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरणीय भंगुरता वाले क्षेत्रों में पर्यटन पर प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

15.5 सारांश

स्थल एवं स्थलीय योजना पर्यटन की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। योजना बनाना लगभग वैज्ञानिक प्रक्रिया हो चुकी है। नियंत्रित पर्यटन आज की आवश्यकता है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पर्यटकों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना समय की माँग के प्रतिकूल है। वास्तव में पर्यटन संरक्षण का दोस्त है उसका दुश्मन नहीं, वन्य प्राणियों के राष्ट्रीय उद्यानों से यह सिद्ध हो चुका है। यह भी देखने में आया है कि यदि पर्यटक न होते तो कुछ स्थानों पर संरक्षण कार्य नहीं होता। इन क्षेत्रों में पर्यटन पर्यावरण के रखवाले के रूप में कार्य करता है। अत: पर्यावरण के संरक्षण के साधन के तौर पर पर्यटन को प्रभावशाली बनाने के लिए किसी विशेष पर्यटन स्थल को स्थल की प्रकृति और स्थिति के अनुसार योजनाबद्ध करना उपयोगी सिद्ध होता है।

15.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटन नियोजन पर्यावरण एवं संस्कृति की सुरक्षा में सहायक हो सकता है और पर्यटन तथा पर्यावरण के मध्य संतुलन स्थापित करता है। देखिए भाग 15.2

2) किसी विशेष पर्यटन स्थल की योजना बनाते समय वहाँ की प्रकृति, भंगुरता और पर्यावरणीय माँगों में विषय में जानकारी होना महत्वपूर्ण है। देखिए भाग 15.3

बोध प्रश्न 2

1) राष्ट्रीय उद्यान और वन्य प्राणियों के अभयारण्य बड़े पैमाने के संरक्षण कार्यक्रम का हिस्सा हैं। वह संरक्षण और पर्यटन दोनों के प्रेरणा स्रोत हैं। इसके साथ ही वह अपने नैरन्तर्य और उत्तरजीविता के लिए पर्यटन द्वारा प्रदत्त आय पर निर्भर रहते हैं। देखिए भाग 15.3

2) देखिए भाग 15.1 एवं 15.4